## नं.३५२ मति-श्रुत- अज्ञानी जीवोंके सामान्य आलाप.

| गु. | जी. | प. | प्रा. | सं. | ग. | इं. | का. | यो. | वे. | क. | ज्ञा. | संय. | द. | ले. | भ. | स | संज्ञि | आ. | उ. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २ मि.सा. | १४ | ६प।६ अ ५प।५ अ ४प।४ अ | १०,७ ९,७ ८,६ ७,५ ६,४ ४,३ | ४ | ४ | ५ | ६ | १३ आ. द्वि. विना. | ३ | ४ | २ कुम. कुश्रु. | १ असं. | २ चक्षु. अचक्षु. | द्र.६ भा.६ | २ भ.अ. | २ मि. सासा. | २ सं. असं. | २ आहा. अना. | २ साकार अनाकार |

३५२मदिअण्णाणि२ ( मु. मदि- सुदअण्णाणीणं । )- सुदअण्णाणीणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणट्टाणाणि, चौद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ,दसपाण-सत्तपाण-णवपाण-सत्तपाण-अट्टपाण-छप्पाण-चत्तारिपाण-चत्तारिपाण- तिण्णि पाणा, चत्तारि सण्णाओ , चत्तारि गदीओ , एइंदियजादि-आदिपंचजादीओ, पुढवीकायादि छक्काया, तेरह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो,

-----------------------------------

अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत उपयुक्त भी होते है।

अकषायी जीवोंके उपशान्तकषाय गुणस्थानसे लगाकर सिध्द जीवोंतकके प्रत्येक स्थानके आलाप ओघालापके समान जानना चाहिए।

इसप्रकार कषायमार्गणा समाप्त हुई।

ज्ञानमार्गणाके अनुवादसे ओघालाप मूल ओघालापकेसमान जानना चाहिए।

मति- अज्ञानी और श्रुत- अज्ञानीजीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर- मिथ्यादृष्टिं और सासादनसम्यग्दृष्टि ये दो गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, छहों पर्याप्तियां,छहों अपर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तिया, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, नौ प्राण, सात प्राण ,आठ प्राण,छह प्राण, चार प्राण,

-----------------------------------

दो दंसणाणि, दव्व भावेही छ लेस्साओ,भवसिध्दिया अभवसिध्दिया, दो सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो,आहारिणो,अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा।

नं. ३५३ मति-श्रुत-अज्ञानी जीवोंके पर्याप्त आलाप.

| गु. | जी. | प. | प्रा. | सं. | ग. | इं. | का. | यो. | व` | क. | इ<br>ा<br>. | सं<br>य. | द. | ले. | भ<br>ा. | स. | सं<br>ज्ञि<br>ा | आ. | उ. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २<br>मि<br>.स<br>ा. | ७<br>प<br>र्या<br>. | ६<br>५<br>४ | १<br>०<br>९<br>८<br>७<br>६<br>४ | ४ | ४ | ५ | ६ | १<br>०<br>म.<br>४<br>व.<br>४<br>अ | ३ | ४ | २<br>कु<br>म.<br>कु<br>श्रु<br>. | १<br>अ<br>सं<br>. | २<br>च<br>ा<br>क्ष<br>ु<br>.<br>अ | द्र.<br>६<br>भा<br>.६ | २<br>भ<br>ा.<br>अ<br>. | २<br>मि<br>.<br>स<br>ा. | २<br>सं<br>.<br>अ<br>सं<br>. | १<br>अ<br>ा<br>हा<br>. | २<br>स<br>ाक<br>ा<br>र<br>अ<br>ना |

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | | ौ.<br>१<br>वै.<br>१ | | | | | च<br>ा. | | | | | | क<br>ार |

३५३तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दसपाण-णवपाण-अट्ठपाण-सत्तपाण-छप्पाण-चत्तारि पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि आदिपंचजादीओ, पुढवीकायादिछक्काया, दस जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व- भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिध्दिया

--------------------------------

चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके विना तेरह योग; तीनों वेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक; मिथ्यात्व और सासादनसम्यक्त्व ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, असज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं मति-श्रुत-अज्ञानी जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर--- आदिके दो गुणस्थान, सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, चारों मनोयोग ,चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञ ाान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक; मिथ्यात्व और सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक ,असंज्ञिक; आहारक,

--------------------------------

अभवसिध्दिया, दो सम्मत्ताणि, सण्णिणो, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्तपाण-सत्तपाण-छप्पाण-पंचपाण-चत्तारिपाण-तिण्णिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एंदियजादिआदी पंचजादीओ, पुढवीकायादी छक्काया, तिण्णि जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिध्दिया अभवसिध्दिया, दो सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा ३५४।

## नं.३५४ मति-श्रुत-अज्ञानी जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

| गु. | जी<br>. | प. | प्रा<br>. | सं<br>. | ग. | इं. | क<br>ा. | यो<br>. | व<br>`. | क<br>. | ज्ञ<br>ा<br>. | सं<br>य. | द<br>. | ले<br>. | भ<br>ा. | स<br>. | सं<br>ज्ञि<br>ा | अ<br>ा. | उ<br>. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २<br>मि<br>.<br>सा<br>. | ७<br>अप<br>ा. | ५<br>अ.<br>५<br>अ.<br>४<br>अ. | ७<br>७<br>६<br>५<br>४<br>,३ | ४ | ४ | ५ | ६ | ३<br>अ<br>ौ.<br>मि<br>.<br>वै.<br>मि<br>.<br>क | ३ | ४ | २<br>कु<br>म.<br>कु<br>श्रु<br>. | १<br>अ<br>सं<br>. | २<br>च<br>ा<br>क्ष<br>ु<br>.<br>अ<br>च | द्र.<br>२<br>क<br>ाश<br>ु.<br>भा<br>.६ | २<br>भ<br>ा.<br>अ<br>. | २<br>मि<br>.<br>स<br>ा. | २<br>सं<br>.<br>अ<br>सं<br>. | २<br>अ<br>ाह<br>ा<br>र<br>अ<br>ना<br>हा<br>र | २<br>स<br>ाक<br>ा<br>र<br>अ<br>ना<br>क<br>ार |

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | | ार्म<br>. | | | | | ा. | | | | | | . |

मदि-सुदअण्णाण-मिच्छाइटठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं, गुणट्ठाणं, चौद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाण-अट्ठपाण-

--------------------------------

साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं मति- श्रुत-अज्ञानी जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर--- आदिके दो गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक, मिथ्यात्व और सासादनसम्यक्त्व ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक; अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

मति-श्रुत-अज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर--- एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, चौदह जीवसमास; छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; नौ प्राण, सात प्राण;

--------------------------------

छप्पाण-सत्तपाण-पंचपाण-छप्पाण-चत्तारिपाण-चत्तारिपाण-तिण्णिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंचजादीओ, पुढवीकायादी छक्काया, तेरह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिध्दिया

अभवसिध्दिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा३५५।

## नं.३५५ मति-श्रुत-अज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

| गु. | जी. | प. | प्रा. | सं. | ग. | इं. | का. | यो. | वे. | क. | ज्ञा. | संय. | द. | ले. | भ. | स. | संज्ञि. | आ. | उ. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ मि. | १४ | ६प. ६ अ. ५प. ५ अ. ४प. ४ अ. | १०,७ ९,७ ८,६ ७,५ ६,४ ४,३ | ४ | ४ | ५ | ६ | १३ आ.द्वि. विना. | ३ | ४ | २ कुम. कुश्रु. | १ असं. | २ चक्षु. अचक्षु. | द्र. ६ भा.६ | २ भ. अ. | १ मि. | २ सं. असं. | २ आहा. अना. | २ साका. अना. |

## नं.३५६ मति-श्रुत-अज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

| गु. | जी. | प. | प्रा. | सं. | ग. | इं. | का. | यो. | वे. | क. | ज्ञा. | संय. | द. | ले. | भ. | स. | संज्ञि. | आ. | उ. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ मि. | ७ पर्या. | ६५४ | १०९८७६,४ | ४ | ४ | ५ | ६ | १० म.४ व.४ औ.१ वै.१ | ३ | ४ | २ कुम. कुश्रु. | १ असं. | २ चाक्षु. अचाक्षु. | द्र.६ भा.६ | २ भा. अ. | १ मि. | २ सं. असं. | १ आहा. | २ साकार अनाकार. |

३५६तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दसपाण-णवपाण-अट्ठपाण-सत्तपाण-छप्पाण-चत्तारिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी

--------------------------------

आठ प्राण, छह प्राण; सात प्राण, पांच प्राण; छह प्राण, चार प्राण; चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, आहारककाययोगव्दिकके विना तेरह योग तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्ही मति-श्रुत-अज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर--- एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण; चारों

--------------------------------

पंचजादीओ, पुढवीकायादी छक्काया, दस जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहिं  छ लेस्साओ, भवसिध्दिया अभवसिध्दिया, मिच्छत्तं सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्तपाण-सत्तपाण-छप्पाण-पंचपाण-चत्तारिपाण-तिण्णिपाणा, चत्तारि सण्णाओ,चत्तारि गदीओ, एइंदियजादिआदी पंचजादीओ, पुढवीकायादी छक्काया, तिण्णि जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिध्दिया अभवसिध्दिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा३५७।

## नं.३५७  मति-श्रुत-अज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

| गु. | जी. | प. | प्रा. | सं. | ग. | इं. | का. | यो. | व`. | क. | इा. | संय. | द. | ले. | भ. | स. | संज्ञिा | आ. | उ. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ मि. | ७ अप. | ६ अ ५ अ ४ अ | ७ ७ ६ ५ ४। ३ | ४ | ४ | ५ | ६ | ३ अौ.मि वै.मि.का | ३ | ४ | २ कुम. कुश्रु. | १ असं. | २ चाक्षु. अच | द्र.२ का.शु. भा६ | २ भ.अ. | १ मि. | २ सं.असं. | २ आहा.अना. | २ साका.अना. |

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | | र्म | | | | | ा<br>६<br>ु<br>. | | | | | | |

--------------------------------

संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय,चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिध्दिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं मति-श्रुत-अज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर--- एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां चार अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिध्दिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

--------------------------------

मदि-सुदअण्णाण-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिध्दिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा३५८।

## नं.३५८ मति-श्रुत-अज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

| गु. | जी. | प. | प्रा. | सं. | ग. | इं. | का. | यो. | वे. | क. | ज्ञा. | संय. | द. | ले. | भ. | स. | संज्ञि. | आ. | उ. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ सासा. | २ सं.प.स. अ. | ६ प. ५ अ. | १० ७ | ४ | ४ | १ पंचे. | १ त्रस | १३ आ. व्दि.विना. | ३ | ४ | २ कुम. कुश्रु. | १ असं. | २ चक्षु. अचक्षु. | द्र. ६ भा.६ | १ भ. | १ सासा. | १ सं. | २ आहा. अना. | २ साका. अना. |

## नं.३५९ मति-श्रुत-अज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

| गु. | जी. | प. | प्रा. | सं. | ग. | इं. | का. | यो. | वे. | क. | ज्ञा. | संय. | द. | ले. | भ. | स. | संज्ञि. | आ. | उ. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | १ | ६ | १ | ४ | ४ | १ | १ | १ | ३ | ४ | २ | १ | २ | द्र. | १ | १ | १ | १ | २ |

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सासा. | सं. प. | | ० | | | पंचो. | त्रस. | ० म.४ व.४ औ.१ वै.१ | | | कुम. कुश्रु. | असं. | चक्षु. अचक्षु. | ६. भा.६ | भा. | सासा. | सं. | आहार | साका. अना. |

३५९तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी,

--------------------------------

मति-श्रुत-अज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर--- एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी- पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारकव्दिकके विना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिध्दिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं|

उन्हीं मति-श्रुत-अज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर--- एक सासादन गुणस्थान, एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग,

--------------------------------

तसकाओ, दस जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुजुत्ता वा |

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदीए विणा तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा३६०।

## नं.३६० मति-श्रुत-अज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

| गु. | जी. | प. | प्रा. | सं. | ग. | इं. | का. | यो. | वे. | क. | ज्ञा. | संय | द. | ले. | भ. | स. | संज्ञि | आ. | उ. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ सा | १ सं. अ. | ६ अ. | ७ | ४ | ३ ति म दे. | पंचे. | १ त्रस. | ३ औ.मि. वै.मि. का | ३ | ४ | २ कुम. कुश्रु. | १ असं. | २ चक्षु अचक्षु | द्र. २ का. शु. भा. ६ | १ भ. | १ सासा. | १ सं. | २ आहा. अना. | साका. अना. |

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | | र्म | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | . | | | | | | | | | | | |

[१] (मु. विभंगणाणाणं) विभंगण्णाणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी , तसकाओ,

--------------------------------

औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; तीनों वेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं मति-श्रुत-अज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर--- एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

विभंगअज्ञानी जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर--- आदिके दो गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति,

--------------------------------

दस जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, विभंगणाणं, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, दो सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता३६१।

## नं.३६१ विभंगज्ञानी जीवोंके सामान्य आलाप.

| गु. | जी. | प. | प्रा. | सं. | ग. | इं. | का. | यो | वे. | क. | ज्ञा. | संय | द. | ले. | भ. | स. | संज्ञि | आ. | उ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २ मि. सा. | १ संप. | ६ | १० | ४ | ४ | १ पंचे. | १ त्रस. | १० म.४ व.४ औ.१ वै.१ | ३ | ४ | १ विभं. | १ असं. | २ चक्षु अचक्षु | द्र.६ भा.६ | २ भ. अ. | २ मि. सासा. | १ सं. | १ आहार | २ साकार अनाकार |

[1](मु. विभंगणाणि) विभंगण्णाणं-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं,एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, विभंगणाणं, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भावसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा३६२।

## नं.३६२ विभंगज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप.

| गु. | जी. | प. | प्रा. | सं. | ग. | इं. | का. | यो | वे. | क. | ज्ञा. | संय | द. | ले. | भ. | स. | संज्ञि | आ. | उ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | | | | | | | | | | | ा | | |
| १ मि. | १ सं. प. | ६ | १० | ४ | ४ | १ पंचे. | १ त्रस. | १० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १ | ३ | ४ | १ विभं. | १ असं. | २ चक्षु अचक्षु | द्र. ६ भा ६. | २ भ. अ. | २ मि. | १ सं. | १ आहा. | २ साकार अनाकार |

-------------------------------

त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; तीनों वेद, चारों कषाय, एक विभंगावधिज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व और सासादनसम्यक्त्व, ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

विभंगअज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर--- एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पूर्वोक्त दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, विभंगावधिज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

-------------------------------

[१] (मु. विभंगणाणि) विभंगण्णाण-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चात्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, विभंगणाणं, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा३६३।

## नं.३६३ विभंगज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप.

| गु. | जी. | प. | प्रा. | सं. | ग. | इं. | का. | यो | वे. | क. | ज्ञा. | संय | द. | ले. | भ. | स. | सङिा | आ. | उ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ सासा. | १ सं.प. | ६ | १० | ४ | ४ | १ पंचे. | १ त्रस. | १० म.४ व.४ औ.१ वै.१ | ३ | ४ | १ विभं. | १ असं. | २ चक्षु अचक्षु | द्र.६ भा६. | १ भ. | १ सा. | १ सं. | १ आहार | २ साकार अनाकार |

आभिणिबोहिय-सुदणाणाणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, पण्णारह जोगा, तिण्णि वेदा अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि

कसाया अकसाओ वि अत्थि, दो णाणाणि, सत्त संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि

--------------------------------

विभंगअज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर--- एक सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी- पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पूर्वोक्त दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, विभंगावधिज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

आभिनिबोधिक और श्रुतज्ञानी जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर--- अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तकके नौ गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; सात प्राण; चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है; चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पन्द्रहों योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है; चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है; मति और श्रुत ये दो ज्ञान, सातों संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

--------------------------------

सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा३६४।

## नं.३६४ मति-श्रुत-ज्ञानी जीवोंके सामान्य आलाप.

| गु. | जी. | प. | प्रा. | सं. | ग. | इं. | का. | यो | वे. | क. | ज्ञा. | संय | द. | ले. | भ. | स. | सज्ञि | आ. | उ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | | | | | | | | | | | ा | | |
| १ अविसे. क्षी. | २ संप. सं. अ. | ६ प ६ अ. | १० ७ | ४ क्षीण सं. | ४ | १ पंचे. | १ त्रस. | १ ५ | ३ अपग. | ४ अकषा. | २ मति श्रुत. | ७ | ३ के द. विना. | द्र. ६ भा ६. | १ भ. | ३ औप. क्षा. क्षाया. | १ सं. | १ आहा. अना. | २ साका. अना. |

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ खिणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, एगारह जोगा, तिण्णि वेदा अवगदवेदो वि अत्थि चत्तारि कसाया अकसाओ वि अत्थि, दो णाणाणि, सत्त संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा३६५।

--------------------------------

## नं.३६५ मति-श्रुत-ज्ञानी जीवोंके पर्याप्त आलाप.

| गु. | जी. | प. | प्रा. | सं. | ग. | इं. | का. | यो | वे. | क. | ज्ञा. | संय | द. | ले. | भ. | स. | संज्ञि | आ. | उ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९ अ | १ सं | ६ | १० | ४ क्ष | ४ | १ पं | १ त्र | १ १ | ३ अ | ४ अ | २ म | ७ | ३ के | द्र. ६ | १ भ | ३ अ | १ सं | १ अ | २ सा |

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वि से . क्ष ीण ा. | प. | | | ीण ा सं . | | चे . | स . | म. ४ व. ४ अ ौ. १ वै. १ अ ा. १ | प ग . | क ा . | ति. श्रु त. | | द. वि ना . | भा . ६ | . | ौप क्ष ा. क्ष ाय ो. | . | ा हा | का अ ना |

-------------------------------

उन्हीं आभिनिबोधिक और श्रुतज्ञानी जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर--- अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे क्षीणकषाय तकके नौ गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां; दशों प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पर्याप्तकालसंबन्धी ग्यारह योग, तीनों वेद तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, मति और श्रुत ये दो ज्ञान, सातों संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

-------------------------------

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तरि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोगा, इत्थिवेदेण विणा दो वेदा, चत्तारि कसाया, दो णाणाणि, तिण्णि संजमा, तिण्णि दंसणाणि,

दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा३६६।

## नं.३६६ मति-श्रुत-ज्ञानी जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

| गु. | जी. | प. | प्रा. | सं. | गा. | इं. | का. | यो. | वे. | क. | ज्ञा. | संय. | द. | ले. | भ. | स. | संज्ञि. | आ. | उ. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २ अवि. प्र. | १ सं. अ. | ६ अ | ७ | ४ | ४ | १ पंचे. | १ त्रस. | ४ औ.मि. वै.मि. आ.मि. कार्म. | २ पु. ा. | ४ | २ मति. श्रुत. | ३ असं. सा. छेदो. | ३ के.द. विना. | द्र. २ का. शु. भा. ६ | १ भ. | ३ औप. क्षा. क्षायो. | १ सं. | २ आहा. अना. | २ साकार अनाकार |

आभिणिबोहिय सुदणाण असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, दो णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्व भावेहिं छ लेस्साओ,

--------------------------------

उन्हीं आभिनिबोधिक और श्रुतज्ञानी जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर--- अविरतसम्यग्दृष्टि और प्रमत्तसंयत ये दो गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र,

वैक्रियिकमिश्र, आहारकमिश्र और कार्मणकाययोग ये चार योग, स्त्रीवेदके विना शेष दो वेद, चारों कषाय, मति और श्रुत ये दो ज्ञान, असंयम, सामायिक और छेदोपस्थापना ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

आभिनिबोधिक और श्रुतज्ञानी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर--- एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारकद्विकके विना शेष तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, मति और श्रुत ये दो ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक,

-------------------------------

भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा३६७।

### नं.३६७ मति-श्रुत-ज्ञानी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

| गु. | जी. | प. | प्रा. | सं. | ग. | इं. | का. | यो. | वे. | क. | ज्ञा. | संय | द. | ले. | भ. | स. | संज्ञि | आ. | उ. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ अवि | १ संप. सं. अ. | ६ प ६ अ. | १० ७ | ४ | ४ | १ पंचे. | १ त्रस. | १३ आ. द्वि. वि | ३ | ४ | २ मति. श्रुत. | १ असं. | ३ के. द. विना. | द्र. ६ भा ६. | १ भ. | ३ औप. क्षा. क्ष | १ सं. | १ आहा. | २ सा का. अना. |

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | | ना<br>. | | | | | | | | ाय<br>ो. | | | |

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, दो णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वभावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि , सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा३६८।

--------------------------------

## नं.३६८ मति-श्रुत-ज्ञानी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

| गु. | जी. | प. | प्रा. | सं. | ग. | इं. | का. | यो. | वे. | क. | ज्ञा. | संय | द. | ले. | भ. | स. | संज्ञि | आ. | उ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १<br>अवि. | १<br>संप. | ६ | १० | ४ | ४ | १<br>पंचे. | १<br>त्रस. | १०<br>म.४<br>व.४<br>अ | ३ | ४ | २<br>मति.<br>श्रुत. | १<br>असं. | ३<br>के.द.<br>विना. | द्र.६<br>भा६. | १<br>भ. | ३<br>औप.<br>क्षा.<br>क्ष | १<br>सं. | १<br>आहा | २<br>साका<br>अना |

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | | ी.<br>१<br>वै.<br>१ | | | | | | | | ाय<br>ो. | | | |

--------------------------------

औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं आभिनिबोधिक और श्रुतज्ञानी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर--- एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, मति और श्रुत ये दो ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीनों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

--------------------------------

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोगा, दो वेदा, चत्तारि कसाया, दो णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा३६९।